www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हरिद्वार सेमिनार विशेषांक Page No. : 110-114

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' और 'तीसरी ताली' उपन्यासों में किन्नर विमर्श

-डॉ. संजीव कुमर .के

एम.ई.एस. असमाबी कालेज, पि.वेम्बल्लूर, कोटुंग्ल्लूर, केरला

मानव समुदाय में स्त्री, पुरुष और हिजड़ा भगवान की रचना है। मनुष्य समुदाय हिजड़ों को वर्षों से हाशिए पर रखते चले आ रहा है। ये समुदाय भारतीय समाज के सबसे उपेक्षित वर्गों में से एक है। जिन्हें थर्ड जेंडर, ...स्स, हिजड़ा, खुसरा, छक्का, पावैया, जनखा, किन्नर, नपुम्सक, शिखण्डी आदि नामों से संबोधित किया जाता है। किन्नरों की व्यथा को रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। महेन्द्र भीष्म कृत 'मैं पायल', नीरज ...व कृत 'यमदीप', चित्रा मुद्गल कृत 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा', प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' में किन्नर समुदाय की दयनीय स्थिति का वर्णन है। प्रदीप सौरभ के 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नरों की व्यथा का वर्णन है। 'तीसरी ताली' में एक साथ दो कथा चलती है। एक ओर किन्नरों की कथा चलती है तो दूसरी ओर कॉलगर्ल और लेस्बियनों की कहानी चलती है।

'तीसरी ताली" उपन्यास का प्रारंभ दिल्ली के सिद्धार्थ एनक्लेव से शुरु होता है। सिद्धार्थ एनक्लेव में रहने वाला गौतम साहब के घर में 'हिजड़ा' का जन्म होता है। गौतम साहब नेग लेने आए हिजड़ों के सामने दरवाजा नहीं खोलता। इसका कारण आनन्दी आण्टी की कथन से स्पष्ट है "एक–न–एक दिन बेटा हिजड़ों को सौपना ही पड़ेगा। ये दुनिया ऐसे बच्चों को स्वीकार नहीं करती। मन्द बुद्धि और विकलांग बच्चों को तो समाज बर्दाश्त कर लेता है, लेकिन हिजड़ों को नहीं"। गौतम साहब अपने परिवार को लेकर बाहरी दिल्ली के एक गाँव में ...ता है और वर्षों तक वे उसे लड़का बनाने की कोशिश करते रहे। एक दिन में विनीत में स्त्रीत्व जागा और वह अपनी बहनों के कुछ कपड़े और कुछ रुपये लेकर भाग जाता है। लेकिन गौतम साहब न उसकी खोज–खबर करते है, न ही पुलिस में रिपोर्ट दर्जा करते है। मोहल्लेवालों को यह कहकर शांत कर देते है कि वह अपनी बुआ के घर कानपुर गाया है और अब वहीं पढ़ाई करेगा। शहर पहुँचे विनित शरीरिक शोषण के शिकार बन जाते है, और पुलिस उसे पकडते है। थाने के कांस्टेबल चौधरी की सहायता से वह ब्यूटीशियन का काम करने लगे। बाद में विनीत से विनिता बनी वह समलैंगिक के अधिकार के लिए लड़ने भी लगी। वर्षों बाद गौतम साहब विनिता से मिलने आते है। साहब के दिये पैकेट को खोलने के बजाय विनिता उसे फाडते है तो "उसमें एक बनारसी साडी थी, कुछ चूडियाँ, बिन्दी के पैकेट और सस्ती किस्म की कुछ लिपिस्टिक व मेकअप का सामान। साडी देखकर विनीता भावुक हो गई। गौतम साहब विनीता को साड़ी भैंट करके प्रायश्चित करना चाहते थे"।